कहानी संग्रह

मज़हब

उषा राजे सक्सेना

मज़हब

ऊषा राजे सक्सेना

उषा राजे सक्सेना

गोरखपुर उत्तर-प्रदेश में जन्मीं, विगत तीन दशक से इंग्लैंड में प्रवासी भारतीय के रूप में जीवनयापन करनेवाली, मूलत: कवयित्री, कथाकार उषा राजे सक्सेना सर्जनात्मक प्रतिभा- संपन्न एक ऐसी लेखिका हैं जिनके साहित्य में अपने देश, सभ्यता, संस्कृति तथा भाषा के प्रति गहरे और सच्चे राग के साथ प्रवासी जीवन के व्यापक अनुभवों और गहन सोच का मंथन मिलता है।

हिंदी के प्रचार-प्रसार से जुड़ी उषा राजे सक्सेना का लेखन (हिंदी-अंग्रेजी) पिछली सदी के सातवें दशक में साउथ लंदन के स्थानीय पत्र-पत्रिकाओं एवं रेडियो प्रसारण के द्वारा प्रकाश में आया। तदनंतर आपकी कविताएँ, कहानियों एवं लेख आदि भारत, अमेरिका एवं योरोप के प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में छपती रहीं। आपकी कई रचनाएँ विभिन्न भारतीय भाषाओं एवं अंग्रेजी में अनूदित हो चुकी हैं। कुछ रचनाएँ जापान के ओसाका विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में भी सम्मिलित हैं।

उषा राजे ब्रिटेन की एकमात्र हिंदी की साहित्यिक त्रैमासिक पत्रिका 'पुरवाई' की सह-संपादिका तथा हिंदी समिति यू. के. की उपाध्यक्षा हैं। पिछले तीन दशक आप ब्रिटेन के लंदन बॉरो ऑफ मर्टन की विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं में महत्वपूर्ण पदों पर कार्यरत रही हैं। आपने बॉरो ऑफ मर्टन एजूकेशन अथॉरिटी के पाठ्यक्रम का हिंदी अनुवाद भी किया।

भारत की विभिन्न संस्थाओं द्वारा प्रवास में हिंदी साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए सम्मानित। अभी हाल ही में भारत के प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने उषा जी को उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ में 'हिंदी विदेश प्रसार सम्मान' से पुरस्कृत किया है।

कुछ ही वर्षों पूर्व उषा जी के कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय (हरियाणा) ने शोधकार्य किया है।

प्रमुख कृतियाँ:

काव्य-संग्रह : विश्वास की रजत सीपियाँ, 1 996; इंद्रधनुष की तलाश में, 1997;

कहानी-संग्रह : प्रवास में, 2002।

संपादन : मिट्टी की सुगंध, 1999 (ब्रिटेन के प्रवासी भारतवंशी लेखकों का प्रथम कहानी-संग्रह)।

लेखक के बारे में

भारतीय लेखक अक्सर आधुनिक यूरोपीय समाज के अंतर्विरोधों और खूबियों पर निगाह डालते रहे हैं। विभिन्न रचनात्मक विधाओं में उन्होंने विकसित समाजों के अँधेरों-उजालों का अंकन किया है।

इधर यूरोप में रह रहे आप्रवासी भारतीय लेखकों ने इसी दिशा में अपेक्षतया ज्यादा प्रामाणिक और विश्वसनीय काम किया है। अपनी मूल भारतीय दृष्टि और वहाँ के समाज के साथ लम्बे संसर्ग के फलस्वरूप वे उन हकीकतों को ज्यादा गहराई से पकड़ पाए हैं, जो कभी-कभार की इक्का-दुक्का यात्राओं से पकड़ में नहीं आतीं।

उषा राजे सक्सेना उन्हीं लेखकों में से एक हैं। वे लम्बे समय से लंदन में हैं, और वहीं के हिंदीसेवी समाज में सतत् सक्रिय हैं। उनकी ये कहानियों लंदन के उनके साक्षात् अनुभवों को प्रतिबिम्बित करती हैं और हमारे अपने यथार्थबोध तथा सांस्कृतिक दृष्टि के प्रिज्म से वहाँ की सामाजिक व मानवीय वास्तविकताओं से हमारा परिचय कराती हैं। इस तरह कलात्मक आस्वाद के साथ-साथ इन कहानियों से हमें अपने समाजशास्त्रीय समझ को पुख्ता करने का आधार भी प्राप्त होता है।

भाषा और शैली की प्रवाहमयता इन कथा-रचनाओं को मौजूदा कथा-धारा में एक अलग स्थान देती है।

समर्पित है उन खामोशियों को

जो दम तोड़ चुकी हैं,

किसी दस्तक के इंतजार में....

अनुक्रम

महत्वाकांक्षी मयंक	6
डायरी के पन्नों से....	19
दर्द का रिश्ता	35
मज़हब	46
मिस्टर कमिटमेंट	65

महत्वाकांक्षी मयंक

जर्मनी से खुद को स्मगल करता हुआ, कई सालों से बेकार मयंक, उधार के पैसों से, अच्छे मौके की तलाश में, तीन दोस्तों के साथ ब्रिटेन में घुसा। कई महीने इधर-उधर भटकने के बाद, जब उसे एक इंडियन कैश एंड कैरी में वेजेज-क्लर्क की नौकरी। मिल गई, तो आस-पास रहने वाले उस जैसे ही अवैध ढंग से आए लंडूरों ने कहा, "यार मयंक, तुझे तो नौकरी मिल गई। तेरे तो पौ बारह, अब परमानेन्ट वीसा के लिए किसी ब्रिटिश-बॉर्न या अंग्रेज लड़की से शादी बना ले। वर्ना हमेशा गर्दन पर तलवार लटकती रहेगी।"

मयंक ने सोचा मेहनत से कमाए इन पैसों से, वह कतई अंग्रेज लड़की से, बीजा के लिए, शादी नहीं करेगा। आगे ही कई लोग नाकों चने चबा रहे हैं। इसलिए वह गुरुद्वारे, मंदिरों, आर्य-समाज भवन आदि जैसे धार्मिक-स्थलों के गाहे-बगाहे चक्कर काटने लगा, जहाँ लोग अपनी युवा लड़कियों के लिए अच्छे वर की तलाश में मत्था टेकने आते थे। उसे पूरी आशा थी किसी और की मुराद के साथ उसकी मुराद भी पूरी होगी।

तभी एक दिन किसी ने उसे टूटिंग वाले हिंदु-समाज के हवन में अंजलि और उसकी बा से मिलवाया। अंजलि लाल रंग की लो-कट चोली-चनिया पहने उस समय बा के साथ पूरी तल रही थी। जब वह पूरी उठाने के लिए झुँकती तो उसकी मक्खन सी सफेद, पतली कमर बेला चमेली की डाली सी लचक-लचक जाती। अंजलि के तन से पूरी और पसीने की मिली-जुली युवा-गंध जब मयंक के नथुनों से होती हुई पेट के अंदर सरसराई तो वह समझ गया, "यही है वह सतरंगी जो उसका बेड़ा पार लगाएगी" और उस सारी शाम वह अंजलि से बतियाता, हूलाहूप की तरह उसके चारों ओर चक्कर काटता रहा।

खाना टेबुल पर लग चुका था। तभी किसी ने कहा, 'अरे! अंजलि रायता कहाँ है?' और अंजलि चट से किचन-टेबुल पर रायते के लिए दही मथने लगी। इधर अंजलि दही मथ रही थी उधर उसके पोनीटेल से विद्रोह करती, एक लट बार-बार दही में डुबकी लगाने की तैयारी कर रही थी। हैरान-परेशान अंजलि बार-बार गर्दन झटक कर उसे पीछे फेंक रही थी। पर वह कम्बख्त लट बार-बार छटक कर वापस आ जाती। मयंक वही सिंक के पास खड़ा जग में पानी भर रहा था। मौका बढ़िया था.....उसने जग किचन टेबुल पर रखा और, 'अलाओ मी' कहते